डा० भवानीलाल भारतीय
संख्या ......
तिथि ......
पुस्तकालय ......

॥ ओ३म् ॥

पुराण और वाममार्ग

प्रारम्भिक शब्द

किसी व्यक्ति विशेष के जब बुरे दिन आते हैं तो उसकी बुद्धि विचलित हो जाती है जैसा कि कहा भी है—

"विनाश काले विपरीत बुद्धि"

इसी प्रकार जब किसी जाति अथवा देश के दुर्भाग्योदय हों तो उसके अग्रगण्य पुरुष लक्ष्य भ्रष्ट हो जाते हैं। उनके अधःपतन का साधारण-जन-समुदाय पर चिर-स्थाई प्रभाव पड़ता है, जिसका दूर होना असम्भव सा हो जाता है।

महाभारत युद्ध से कुछ देर पहिले ही आर्य्यवर्त्त के दुर्दिन का प्रारम्भ होता है—जबकि आसुरी-वृत्तियों की वृद्धि और दैवी सम्पत्तियों का अभाव होने लगा। जाति

सन्दर्भ पुस्तकालय
परिग्रहण क्रमांक 2897
दयानन्द महिला महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र

के मुख्य कुछ एक नामधारी ब्राह्मणों के मस्तिष्क विचलित हुए। संस्कृत भाषा के विद्वान् तो वे थे ही, झट अण्ड बण्ड श्लोक रच कर ग्रन्थाकार में लिख मारे, और शिव और पार्वती तथा भैरव और भैरवी के कल्पित सम्वादों के रूप में वे वे अत्याचार और व्यभिचार फैलाये कि क्या कहें! संसार का घृणित से घृणित पाप उनके समक्ष मुक्ति-प्रद था। देवताओं का नाम ले २ कर, निर्दोष पशु पक्षियों का घात करके, उन को हड़प कर जाना और सिद्धि की आकांक्षा में मद्योन्मत्त तथा निर्लज्ज होकर व्यभिचार करना जन्म मरण के बन्धनों से विमुक्त कराने वाला समझा गया। इन अत्याचारों का यहां तक प्रसार हुआ कि राजे रङ्क, पण्डित तथा मूर्ख प्रायः सब के सब इस जाल में फंस गये। अपने ग्रन्थों तक ही यदि ये महात्मा सन्तोष करते तो अधिक शोक का विषय न था, परन्तु ये तो यहां तक बढ़े कि आर्ष ग्रन्थों पर भी हाथ साफ करना आरम्भ कर दिया। और अब हमारे दुर्भाग्य से, वेद के अतिरिक्त अन्य, कोई भी प्राचीन अथवा मध्य-कालीन पुस्तक इनके हस्ताक्षेप से बचा हुआ नहीं मिल सकता। इसीलिये उन में ऐसा परस्पर विरोध पाया जाता है,

कि एक धर्म्म जिज्ञासु के लिये धर्म्म और अधर्म्म में अन्तर देखना असम्भव सा प्रतीत होता है। एक ही ग्रन्थ में जहां मांस-भोजी होना पाप बतलाया है वहां मांस खाने खिलाने की विधि, और उससे अनन्त पुण्य की प्राप्ति भी मिल जावेगी, और जहां मद्यपान को महापाप लिखा होगा, वहां इससे देवताओं की तृप्ति का उल्लेख भी मिल जावेगा इत्यादि।

इस प्रकार की दशा को देखकर भगवान् बुद्ध ने अपने राज्य-सिंहासन पर लात मारी, और तपस्या के अनन्तर इन अत्याचारों के विरुद्ध प्रचार आरम्भ किया। उस समय इन स्वार्थी लोगों ने वेद मन्त्रों के गूढ़ यौगिक शब्दार्थों को न समझ कर, अर्थों के अनर्थ करने पर कमर बांधी। यहां तक कि भगवान् बुद्ध को (जो स्वयं वेद के पण्डित न थे) कहना पड़ा कि यदि वेद इस प्रकार के अत्याचारों, पापों, उपद्रवों तथा व्यभिचारों का उपदेश करते हैं तो ऐसे वेदों की भी संसार को कोई आवश्यकता नहीं है।

भगवान् बुद्ध के सर्वमान्य सिद्धान्तों ने लोगों को प्रायः इन खोटे कर्म्मों से बचा दिया और यह लोग

चुप से हो गये। तब इन्होंने ने नवीन तन्त्र ग्रन्थ बना बना कर अपने अनुयायीओं को यह शिक्षा दी कि "यह धर्म्म छिपा कर रखने के योग्य है" इस प्रकार बहुत कम लोग इन के अत्याचारों को सुन पाते, परन्तु काल की गति विचित्र है। कुछ समय और व्यतीत हुआ, और उन महात्माओं के विचारों का अन्ध-श्रद्धालुओं के अन्दर गुप्त रूपेण प्रचार बढ़ने लगा, यहां तक कि हमारे पौराणिक मतावलम्बी भाइयों को भी ये तन्त्र ग्रन्थ अपनाने पड़े। अब स्थिति यह है कि सनातन धर्म्मी कहलाने वालों के बड़े बड़े माननीय नेता तथा व्याख्यान दाता, पं गौरी शंकर प्रभृति इन तन्त्रों को सनातन धर्म्म के मान्य ग्रन्थों की गणना में रखते तनिक नहीं हिचकचाते, (जैसा कि आपने कुछ वर्ष हुए नमक मण्डी अरोड़ वंश हाल में अपने एक व्याख्यान में महानिर्वाण तन्त्र केसम्बन्ध में कहा था) और वस्तुतः वे ऐसा कहने में विवश हैं क्योंकि यदि वे ऐसा न कहें तो उन्हें पुराणों को भी तिलाञ्जलि देनी पड़ती है। इस छोटी सी पुस्तिका में हम यह बातें दर्शाने का प्रयत्न करेंगे—

१—तन्त्रों और पुराणों का सम्बन्ध

२—तन्त्रों की शिक्षा।

३—पुराणों की असङ्गत मन-घड़न्त कथायें (जो कि अगले ट्रैक्ट में छपेंगी)

आशा है गुण-ग्राही सज्जन इन सब बातों पर भली भान्ति विचार करेंगे और

तातस्य कूपोऽयमिति ब्रवाणाः

क्षारं जलं का पुरुषाः पिबन्ति।

ऐसे त्याज्य ग्रन्थों के साथ केवल इसी विचार से, कि ये हमारे बड़े वृद्धों के लिखे हुए हैं, चिमटे नहीं रहेंगे। यदि कुछ एक विवेकी महानुभावों के उदार हृदयों पर भी विचार करने का ख्याल पैदा हो सका तो हम अपने परिश्रम को सफल समझेंगे।

'प्रीतम'

पहिला अध्याय

तन्त्रों और पुराणों का सम्बन्ध

---

१. सेन्द्रा देवगणा मुनीश्वरजना लोकाः सपालाः सदा, स्वं स्वं कर्म्म सुसिद्धये प्रतिदिनं भक्त्या भजन्त्युत्तमाः। तं विघ्नेशमनन्तमच्युतमजं सर्वज्ञसर्वाश्रयं, वन्दे वैदिकतान्त्रिकादिविविधैः शास्त्रैः पुरोवन्दितम् ॥ १ ॥

कल्कि पुराण अं० १ ॥ श्लोक १ ॥

अर्थ—देवराजइन्द्र, देवता, श्रेष्ठ महर्षि और लोक पालगण अपने कार्य्य को सिद्ध करने के लिये प्रतिदिन भक्ति के सहित जिसकी उपासना करते हैं; पूर्वकाल में जो देवता वैदिक तान्त्रिकादि अनेक शास्त्रों से पूजित हुआ है (पुराणों द्वारा नहीं) जो

सर्वज्ञ अर्थात् सब कुछ जानता है, सब का आधार है, जिस का जन्म नहीं है (तो अवतार कैसे ?) ऐसे समस्त विघ्नों के नाश करने वाले अविनाशी विष्णु जी की वन्दना करता हूं—देखो कालिक पुराण अंश १ श्लोक १

टीका मुरादाबाद निवासी—
पं० बलदेव प्रसाद मिश्र ।

वैष्णवीतन्त्रमन्त्रेण कामाख्यायोनिमण्डले
सकृत्तु पूजनंकृत्वा फलं शत- गुणं लभेत ।

कालिकापुराण अ० ६० श्लोक ४७, ४८ ॥

अर्थः—वैष्णवी तन्त्र में वर्णित मन्त्र द्वारा कामाख्या के योनि मण्डल पर एक बार भी पूजन किया जाय तो सौ गुणा फल मिलता है ।

गौ और नर की बली

श्री भगवान् उवाच—

वैष्णवीतन्त्र कल्पोक्तः क्रमः सर्वत्र सर्वदा ।
साधकैर्बलिदानस्य ग्राह्यःसर्वसुरस्य च । २

सब देवताओं के लिये बलिदान का जो क्रम वैष्णवीतन्त्र के कल्पमें कहा गया है साधक उसे ही ग्रहण करें।

पक्षिणः कच्छपा ग्राह्या मत्स्या नवविधा मृगाः। महिषो गोधिका गावच्छागो बभ्रश्च सूकराः॥ ३॥

पक्षी, कछुवे, नौ प्रकार के मृग, भैंसे, गोह, गौएं बकरे, नेवले तथा सूअर ग्रहण करें।

खड्गश्च कृष्णसारश्च गोधिका शरभो हरिः। शार्दूलश्च नरश्चैव स्वगात्र रुधिरन्तथा॥४

गेंडा, हीरा हरिण, गोह, शरभ (मृग), शेर (अथवा बन्दर) बाघ, आदमी तथा अपने अंगों का लहू।

चण्डिका भैरवादीनाम्बलयः परिकीर्त्तिताः बलिभिः साध्यते मुक्तिर्बलिभिः साध्यते दिवम्॥ ५॥

चण्डिका तथा भैरव आदियों की बलियां कही हैं। बलियों से ही मुक्ति सिद्ध होती है और बलियों से ही स्वर्ग प्राप्ति होती है।

नारेणैवाथ मांसेन त्रिसहस्रञ्च वत्सरान् ।
तृप्तिमाप्नोति कामाख्या भैरवी मम रूप
धृक् ॥ १५ ॥

मेरे रूप को धारण करने वाली कामाख्या भैरवी आदमी के मांस से ३००० वर्ष तक तृप्त रहती है ।

राजा बनने का नुसखा

नरस्य शीर्षमादाय साधको दक्षिणे करे ।
वामेन रौधिरं पात्रं ग्रहीत्वा निशि जाग्रतः ॥
यावद्रात्रं स्थितो मर्त्यो राजा भवति
चेहवै ॥ ६९–७० ॥ कालिका पुराण अं० ७२ ॥

साधक को चाहिये कि दांयें हाथ में आदमी का सिर लेकर और बांयें हाथ में लहू का पात्र पकड़ कर रात भर जागता रहे । जो पुरुष (इस प्रकार) रात भर खड़ा रहे वह आदमी राजा बन जाता है ।

पद्म पुराण के अनुसार भगवान् कृष्ण कहते हैं कि दीपमाला के दिन बलि दैत्य की पूजा मद्य, मांस आदि से करनी चाहिये । इस से विष्णु प्रसन्न होते हैं ।

गन्ध पुष्पान्ननैवेद्यैः सत्क्षीरैर्गुडपायसैः ।
मद्य मांस सुरा लेह्य चोष्य भक्ष्योपहारकैः ॥
मन्त्रेणानेन राजेन्द्रः स मन्त्री स पुरोहितः ।
पूजां करिष्यति यो वै सौख्यं स्यात्तस्य वत्सरम् ॥

पद्म पुराण उत्तर खण्ड अध्याय १२४ श्लोक
५१, ५२ छापा पूना ।

गन्ध, पुष्प, अन्न तथा दूध समेत नैवेद्य, गुड़ और तस्मै (खीर), मद्य, मांस तथा सुरा, चटनियें, चूसने वाले खाद्य पदार्थों की भेंट देकर मन्त्री और पुरोहित समेत जो राजा पूजा करेगा वह साल भर सुखी रहेगा ।

नीचे जो प्रमाण हैं, वे सुरारचित भारत धर्म रक्षक बङ्ग-विद्वच्छिरोमणि तन्त्र सागर मन्थन मन्दराचल श्री युक्त शिव चन्द्र विद्यार्णव भट्टाचार्य्य महोदय के 'तन्त्र तत्त्व' नामक ग्रन्थ में से दिये गये हैं । देखो Principles of Tantra Edited by Arthur Avalon Book I.

My worship is of three kinds—Namely, Vaidik Tantrik and mixed (Pauranik). I should therefore be worshipped according to the rules pre-

scribed in three Shastras of Veda, Tantra & Purana.

मेरी पूजा के तीन प्रकार हैं--अर्थात् वैदिक, तान्त्रिक तथा मिश्रित (पौराणिक) इस कारण मेरी पूजा तीनों शास्त्रों-वेदों, तन्त्रों और पुराणों में वर्णित नियमों के अनुसार करनी उचित है। श्री मद्भागवत ११ स्कन्ध श्री कृष्ण ऊधव सम्वाद।

He who would free himself from the bonds of heart should worship Bhagvan in the manner prescribed in Tantra.

वह, जिसे मांसिक बन्धनों से विमुक्त होने की इच्छा हो, तन्त्रों में वर्णित विधि से भगवान् का अर्चन करे। श्री मद्भागवत ११ स्कन्ध॥

Hear also how worship is to be performed in the Kali age, according to the ordinance of Various Tantras.

यह भी सुनों कि कलयुग में तान्त्रिक आज्ञानुसार पूजा कैसे करनी चाहिये।

Commenting on this Verse Shridhar Swami says:—

By a seperate reference again the superiority of Tantrik Path in the Kali age is shown.

इस श्लोक पर टीका करते हुए श्रीधर स्वामी कहते

है—पृथक् उद्धर्ण से फिर कलियुग में तान्त्रिक मार्ग की उत्कृष्टता दर्शाई गई है।

In the same work Bhagvan counselled Udhav, the crest gem of devotees, as to what should be done in his own worship.

इसी श्री मद्भागवत में भगवान् ने भक्त शिरोमणि ऊधव को उपदेश दिया है कि स्वयं उनकी पूजा में क्या करना चाहिये।

"..Then worship me with Mantras prescribed in both the Veda & Tantra Shastras for the attainment of Sidhi in both.

"....................तो फिर मेरी पूजा वेद तथा तन्त्र शास्त्र में लिखे मन्त्रों द्वारा करो ताकि दोनों में सिद्धि की प्राप्ति हो"

We ask those who have faith in Bhagvan & theBhagvat whether they have faith in Bhagvan as stated in the Bhagvat.

जिन लोगों की भगवान् तथा भागवत में श्रद्धा है, हम उनसे पूछते हैं कि वे भगवान् उपदेश को मानते हैं या नहीं जो उन्होंने भागवत में वर्णन किया है।

Intelligent men should worship Janardana (Krishna) by the rites prescribed in the Veda or Agma.

ज्ञानी पुरुष जनार्दन की पूजा वेद अथवा तन्त्र विधि से करें। वायु पुराण।

The Devi should be meditated upon as ten handed & worshipped according to Durga Tantra .... The enitre Kalika Purana follows the Tantra. All the Vijas, Mantras & Murtis of Bhagvan Maheshwar which are given for the Shiv Kavacha in the Brahmottar Khand of Sakanda Purana are inspired by Tantra.

दशभुजा वाली देवी का ध्यान करना चाहिये और दुर्गा तन्त्र में वर्णित विधि के अनुसार पूजा करनी चाहिये। .... सारे का सारा कालिका पुराण तन्त्र का अनुकरण करता है। समस्त बीज, मन्त्र तथा भगवान् महेश्वर की मूर्त्तियां, जिनका वर्णन शिव कवच के लिये सकन्द पुराण के ब्रह्मोत्तर खण्ड में किया गया है तन्त्रों के ही ज्ञानानुसार हैं। (× बीज यथा ह्रीं, क्लीं, श्रीं, हूं)

In the Devi Bhagvat we read:—
In this manner in the Satyayug Brahmanas used

to make constant Japa of the Gayatri, Tara and Hri Lekha Mantras. Hrilekha is a Mantra spoken of in the Tantra. Besides this the whole of this Upasana Khand of the Devi Bhagvat is ornamented with garlands of Tantrik Mantras.

देवी भागवत में हम पढ़ते हैं :—
इस प्रकार सत्युग में ब्राह्मण गायत्री, तारा, ह्री लेख मन्त्र का निरन्तर जप किया करते थे। ह्री लेख मन्त्र का वर्णन तन्त्र में ही आता है। इसके अतिरिक्त देवी भागवत का सारा उपासना खण्ड तान्त्रिक मन्त्रों की पुष्प मालाओं से सुभूषित है।

In the Mahabharat (Shanti Parva) we have Bhagvan Maheshwar's words to Daksha on the Subject of his sacrifice.....This auspicious Prshu Patvrata was of yore created by me .....The community of Sadhakas will understand that this great Pashupat Vrata was according to the Tantra.

महाभारत शांति पर्व में भगवान् महेश्वर के वे शब्द हैं जो कि दक्ष प्रजापति को उसके यज्ञ के सम्बन्ध में कहे गये थे।.....यह शुभ पाशुपत व्रत पूर्वकाल

में मैंने बनाया था।.....साधक समुदाय समझ जायगा कि पाशुपत व्रत तन्त्र के अनुसार ही है।

Next comes the Maha Bhagvata. It is unneccessary to say that this great Purana follows the Tantra.....It is needless to quote any single piece of evidence from the book; for the whole of it, from begining to end is evidence.

तदनन्तर महाभागवत आता है। यह कहना अनावश्यक है कि यह महा पुराण तन्त्र का अनुकरण करता है।.....इस पुस्तक में से किसी विशेष साक्षी को उद्धृत करना निरर्थक है; क्योंकि सारे का सारा पुस्तक, आदि से अन्त तक ही साक्षी रूप है।

Besides this there is a mass of proof in Brahma Purana, Shivpurana, Vishnupurana, Markandeyapurana, Agnipurana, Adityapurana, Vayu Purana, Lingpurana. Nandikeshwar Purana, Bhavishyapurana, Matsyapurana, Kurmapurana, Garur purana, Brahmandpurana, Brahmvai Varta purana Matsya Sukta, Shiv Rahasya, Shiv Samhita, Ishan Samhita, Shiv Dharama, Shiv Sutra & other Shastras. Were we to quote the evidence of every book, it would not be possible to find room for them, in this small volume. We are therefore obliged to refrain from doing so against our will.

इसके अतिरिक्त ब्रह्मपुराण शिवपुराण विष्णु पुराण, मार्कण्डेय पुराण, अग्नि पुराण, आदित्य पुराण, वायु पुराण लिंग पुराण, नन्दिकेश्वर पुराण, भविष्य पुराण, मत्स्य पुराण, कूर्म्मपुराण, गरुड़ पुराण, ब्रह्माण्ड पुराण, ब्रह्मवैवर्त्त पुराण, मत्स्य सूक्त, शिव रहस्य, शिव संहिता, ईशान संहिता, शिव धर्म्म, शिव सूत्र तथा अन्य शास्त्रों में बहुत से प्रमाण हैं।

यदि हमें इन सब पुस्तकों की साक्षी उद्धृत करनी पड़े तो यह हमारे लिये असम्भव होगा कि इस छोटे से ग्रन्थ में उनके लिये स्थान पा सकें। इस लिये अपनी इच्छा के प्रतिकूल ऐसा करने से रुकते हैं।

महाभारत, रामायण अनेक पुराणों और तन्त्रों के अंग्रेज़ी अनुवादक प्रसिद्ध सनातनी विद्वान् श्री मन्मथ नाथ दत्त (जोकि आर्य्य समाजी नहीं) तन्त्र में विधान किये गये मद्य मांसादि पञ्चमकारों की पुष्टि में महानिर्वाण तन्त्र की इङ्गलिश अनुवाद की भूमिका के पृष्ठ २१ पर लिखते हैं :—

"However abhorant these rites may apoear on the face of them, there is no doubt that there is a great esoteric meaning behind them.....

He is to take meat & fish not because they are palatable dishes but because he must be in good health for performing religious rites.

ये रसमें चाहे ऊपर से कितनी भी घृणित क्यों न प्रतीत हों; परन्तु इस में सन्देह नहीं कि उनकी तह में गुप्त अर्थ छिपे हुए हैं.....उसे मांस तथा मत्स्य इस लिये खाना नहीं होतीं कि वे स्वादु पदार्थ हैं प्रत्युत इस लिये कि उसे धार्मिक कर्त्तव्य पूर्ण करने के वास्ते स्वस्थ होना चाहिये।

प्रसिद्ध सनातनी पण्डित बलदेव प्रसाद जी मिश्र जो कि दयानन्द-तिमिरभास्कर के कर्त्ता तथा अनेक पुराणादिकों के टीकाकार सनातन धर्म्म के महामहोपदेशक पं० ज्वाला प्रसाद जी मिश्र के लघु भ्राता थे वह महानिर्वाणतन्त्र की अपनी बनाई टीका की भूमिका में लिखते हैं:—

'हमारे देश में अनेक लोग अन्ध परम्परा से तान्त्रिक उपासना में दीक्षित होकर भी तन्त्रानभिज्ञता के हेतु तन्त्र में कही हुई विधि को बुरा कहते हैं।

धर्मशास्त्र और तन्त्र का मर्म जानते होते तो यह लोग कभी ऐसा न कहते। विशेष करके तान्त्रिक अनुष्ठान फल को शीघ्र ही देता है.....'तन्त्रसार में महानिर्वाण तन्त्र का नाम नहीं लिखा। इस कारण से कोई २ महात्मा इस ग्रन्थ की प्रामाणिकता में संशय करते हैं। ऐसी शंका करने वाले को उचित है कि **पद्मपुराण, अग्नि पुराण** और शंकर विजय को पढ़ कर अपने सन्देह को दूर करे।.....'सामवेद और अथर्व वेद से तन्त्र शास्त्र का आविर्भाव हुआ है। ब्रह्मज्ञान रूप मन्दिर में प्रवेश करने के लिये तन्त्रशास्त्र ही प्रथम सोपान है.....'अपने पूज्यपाद ज्येष्ठ सहोदर **पं० ज्वाला प्रसाद जी मिश्र** कोटिशः धन्यवाद देता हूं कि जिन्होंने आद्यन्त पर्यंत इस तन्त्र की लिखित कापी को देखकर मुझ को उपकृत किया है।

लाहौर के प्रसिद्ध सनातन धर्मी विद्वान् पं० भानुदत्त जी सन् १९११ में छपे अपने अन्तिम ग्रन्थ "हिन्दू धर्म मर्म" में लिखते हैं :—

'मैं तो तन्त्र ग्रन्थों को भी वेद मूलक ही कहूंगा''''' क्योंकि आगम शास्त्र (=तन्त्र ग्रन्थ) भी वेद का एक अङ्ग गिना गया है। आगम ५म (पञ्चम) वेद है और **कौल** ५म आश्रम है।' पृष्ठ ४९

'वैदिक उपासना और तान्त्रिक उपासना में कोई भेद नहीं।' पृष्ठ ८०

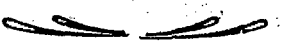

सनातन धर्म सभाके प्रसिद्ध उपदेशक स्वामी प्रकाशानन्द हजरो निवासी अपने "मूर्त्ति पूजा की क़दामत" नामक उर्दू ट्रैक्ट पृष्ठ ११ और १२ पर "कुलार्णवतन्त्र" और "महानिर्वाण तन्त्र" को मूर्त्ति पूजा की सिद्धि में प्रमाण रूप से उद्धृत करते हैं :—"''''''' **महानिर्वाण तन्त्र अति प्राचीन और मुस्तनिद** (प्रामाणिक) ग्रन्थ है.''''''' यह तमाम ग्रन्थ मुज़क्कड़-बाला (उपर्युक्त) **वेद की शाखाओं** के अन्तर्गत हैं और इस लिये इन के प्रमाण खास तौर पर काबिले गौर हैं"।

विवेक प्रिय सज्जनो !

उपरिलिखित कतिपय उद्धरणों से यह भली भांति स्पष्ट हो गया होगा कि तंत्रों और पुराणों तथा तान्त्रिकों और पौराणिकों का परस्पर कितना घनिष्ट सम्बन्ध है। इस परिस्थित में यदि निस्संकोच यह कह दिया जाय कि आधुनिक सनातन धर्म्म ही बाम मार्ग है तो हमारे विचार में कोई क्षति नहीं।

आगामी कुछ एक पृष्ठों में हम तान्त्रिक शिक्षा का दिग्दर्शन कराना चाहते हैं और आशा रखते हैं कि सज्जन गण ऐसी घृणित शिक्षा देने वाले अवैदिक लोगों के बनाये ग्रन्थों को सर्वथा त्याज्य अथवा न्यून से न्यून अप्रामाणिक तो अवश्य ही समझेंगे।

द्वितीय अध्याय

तन्त्रों की शिक्षा

जैसा कि हम प्रारम्भिक शब्दों में लिख चुके हैं, तन्त्रों की घृणित शिक्षा ने आर्य्य जाति को कलंकित करने में सब से अधिक भाग लिया है। इसी शिक्षा के कारण ही जादू, टोने, गंडे और तावीज़ों का प्रचार हुआ, इसी की दया से भूत, प्रेत, पिशाच, डाकिनी, पैशाचनी आदिकों की भ्रम मूलिक उपासना आरम्भ हुई, इसी की कृपा से मद्य, मांस, पशु बलि, नर बलि का प्रचार हुआ, और इसी के सबब से लोगों का आचार, विचार दिन प्रति दिन भ्रष्ट होता चला गया। शोक तो यह है कि वैदिक-धर्म्माभिमानी पौराणिक पण्डित हज़ारों रुपये दक्षिणा लेने वाले कथा वाचक पं. गौरी शंकर प्रभृति भी इन तन्त्र ग्रन्थों को सनातनधर्म्म के मान्य ग्रन्थों की गणना में बताते हुए जाति के अपमान को

चिरस्थाई बनाने का घोर पाप करते हुए भी स्यात् अचेत पड़े हैं। ईश्वर करे कि गौतम और कणाद की सन्तान बगैर सोचे समझे अन्ध-श्रद्धा से ऐसे स्वार्थी लोगों के फन्दे में न फंसे, प्रत्युत स्वयमेव सोच विचार कर अपने भले और बुरे का ज्ञान लाभ करे। अब हम तान्त्रिक शिक्षा के थोड़े से नमूने लिखते हैं —

वेद से विमुख करने की नीति

निर्वीर्य्याः श्रौत जातीया विषहीनोरगाइव
सत्यादौ सफला आसन्कलौ ते मृतका इव

(पं० गौरीशंकरका मान्य महानिर्वाण तन्त्र उल्लास २-१५)

जिस प्रकार विष हीन सर्प की अवस्था हो जाती है, वैसे ही इस समय वैदिक मन्त्रादि वीर्य्य रहित और मृतक तुल्य हो गये हैं। वे मन्त्र सत्युग त्रेता और द्वापर युग के अधिकार में थे।

वेद शास्त्र पुराणानि सामान्य गणिका इव
इयन्तु शाम्भवी विद्या गुप्ता कुल बधूरिव

कुलार्णव तन्त्र उल्लास ११ श्लोक ८५।

वेद शास्त्र तथा पुराण तो साधारण गणिका की तरह हैं; परन्तु यह जो तन्त्र विद्या है यह नई विवाही स्त्री की भांति गुप्त (मान योग) है।

शाक्तियों की श्रेष्ठता।

कौलिकैः सह संसर्गं वसति कुल साधुषु।
कुर्वन्ति कौल सेवां ये नहितान्बाधते कलिः

(पं० गौरीशंकरका मान्य महानिर्वाणतन्त्र। उल्लास ४-६२)

जो लोग कौलिकों के साथ रहते हैं, उनके निकट बसते हैं, और उनकी सेवा करते हैं उनके प्रति कलियुग अपनी सामर्थ्य प्रकाशित नहीं करेगा।

सत्यं सत्यं पुनः सत्यं सत्यं सत्यं मयोच्यते
बिनाह्यागममार्गेण कलौ नास्ति गतिःप्रिये

(पं० गौरीशंकरका मान्य महानिर्वाणतन्त्र उल्लास ८-७)

हे प्रिये! (पार्वती) मैं ने यह सत्य कहा है सत्य कहा है और फिर सत्य कहा है, सत्य कहा है सत्य कहा है कि कुल धर्म्म (वाममार्ग) के बिना कलियुग में गति ही नहीं है।

गुरु विरजानन्द दण्डी
ग्रन्थधर्म पुस्तकालय
पु परिग्रहण क्रमांक 2417 ...
दयानन्द ब्रह्मविद्या महाविद्यालय, कुरुक्षेत्र

ब्रह्मेन्द्रादित्य रुद्रादि देवता मुनि राक्षसाः
कुल-धर्म-परा देवि मानुषेषु तु का कथा ॥

पं०गौरीशंकरका मान्य महानिर्वाणतन्त्र उल्लास२ श्लोक २५

हे देवि ! ब्रह्मा, इन्द्र, सूर्य्य, शिव आदिक देवता, मुनि, और राक्षस सब के सब वाममार्ग का अनुष्ठान करते है तो फिर मनुष्यों का तो कहना ही क्या है।

सज्जनो ! ज़रा सोचो किन लोगों के पीछे लगे हुए हो और किन देवताओं का पूजन कर रहे हो। जब हम उक्त वाममार्ग की लीला (जिसका अनुष्ठान ब्रह्मा, इन्द्र, सूर्य्य और शिव आदिक देवता करते हैं) का कुछ वर्णन करेंगे तो आप निस्सन्देह चकित हो जांयगे।

पन्थास्तु दक्षिणः श्रेष्ठो वामः श्रेष्ठतरो मतः
यस्तु वामं विजानाति स एव परमो गुरुः।

मेरु तन्त्र प्रकाश २० श्लोक ७५।

दक्षिण पन्थ श्रेष्ट है परन्तु वाम मार्ग उस से भी श्रेष्ट है जो वाम मार्ग को जानता है वही परम गुरु है।

श्रीकृष्णो वाम मार्गन्तु फाल्गुनाय (अर्जु-

नाथ) उपदिष्टवान्।

मेरु तन्त्र प्रकाश २० श्लोक ८२।

श्री कृष्ण ने अर्जुन को वाम मार्ग का उपदेश दिया।

वाम मार्गेद्रुतं सिद्धिः। मेरु तन्त्र प्रकाश २२-६४

वाम मार्ग द्वारा शीघ्र सिद्धि की प्राप्ति होती है।

श्री प्रासाद परामन्त्रो जिह्वाग्रे यस्य तिष्ठति
तस्य दर्शन मात्रेण श्वपचोऽपि विमुच्यते।

कुलार्णव तन्त्र ३-२८-१२

इस तन्त्र में वर्णित प्रासादपरा मन्त्र जिसकी जबान पर हो, उस साधक के दर्शन मात्र से चाण्डाल भी मुक्त हो जाता है।

श्री प्रासाद परामन्त्रंशतमष्टोत्तरं जपेत।
मुच्यते ब्रह्महत्यादि महापापैश्च पञ्चभिः[1]।

कुलार्णव तन्त्र ३-३०-८।

जो साधक प्रासादपरा मन्त्र का एक सौ आठ

१—ब्रह्म हत्या सुरापानं स्तेयोगुरवाङ्गनागमः।
महान्ति पातकान्याहु संसर्गश्चापि तैसह ॥ मनु ॥

बार जप करे वह ब्रह्महत्यादि पांच महापापों से छूट जाता है। (क्या यह आर्य्यों का ग्रन्थ है ?)

सर्वेभ्यश्चोत्तमाः वेदाः वेदेभ्यो वैष्णवं परं
वैष्णवादुत्तमं शैवं शैवाद्दक्षिणमुत्तमम् ॥
दक्षिणादुत्तमंवामंवामात्सिद्धान्तमुत्तमम्
सिद्धान्तादुत्तमं कौलं कौलात् परतरं नहि

कुलार्णव तन्त्र २-११-७, ८

सब से उत्तम वेद, वेदों से उत्तम वैष्णव, वैष्णव से उत्तम शैव, शैव से उत्तम दक्षिण, दक्षिण से उत्तम वाम, वाम से उत्तम सिद्धान्त, सिद्धान्त से उत्तम कौल, और कौल से बढ़ कर कोई भी नहीं।

स्पष्ट शब्दोंमें वामियों के सब छोटे बड़े पन्थ भी वैदिक धर्म्म से उत्कृष्ट हैं या यूं कहिये कि वैदिक धर्म्म से वाम मार्ग (जिसे संसार घृणित घोषित करता है) से निकृष्ट है। फिर समझ में नहीं आता कि किस मुंह से पंडित हरदत्त आदि वाम मार्गी और दूसरे पौराणिक विद्वान् तन्त्रों और तान्त्रिक मत पर श्रद्धा रखते हुए भी अपने आप को वैदिक धर्मी प्रकट करते हैं। क्या

केवल भोले वैदिक धर्मियों को धोका देकर अपनी जेबें गर्म करने को ? देखिये अगला श्लोक कैसा स्पष्ट है !

अन्यो वा कुलाधिकं धर्ममज्ञानाद्भजति प्रिये
ब्रह्म हत्यादिकं पापं स प्राप्नोति न संशयः।

कुलार्णव तन्त्र २-१२-५

हे प्रिये ! जो पुरुष अज्ञानवश होकर किसी अन्य धर्म को कुल धर्म (वाम मार्ग) से अधिक मानता है, वह ब्रह्म हत्या आदिक पापों को निस्सन्देह प्राप्त होता है। सुनी व्यवस्था !

तान्त्रिकों के पंच मकार

तान्त्रिक (वाम मार्गी) लोग निम्न लिखित मद्य मांसादि पाञ्च मकारों ('म' से आरम्भ होने के कारण) से सिद्धि मानते हैं :—

मद्यं मांसं च मत्स्याश्च मुद्रा मैथुन मेव च
कुल मार्ग प्रविष्टेन सदा सेव्यं सुहर्षिणा।

मेरु तन्त्र प्रकाश १ श्लोक ५६

मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन ये पाञ्च मकार

उसे हर्ष पूर्वक सेवन करना चाहियें, जो कुलमार्ग में प्रवेश करें।

मद्यं मांसञ्च मत्स्यञ्च मुद्रा मैथुन मेव च
मकार पञ्चकं देवि देवता प्रीति कारकम् ॥

कुलार्णव तन्त्र उल्लास १० श्लोक ५

हे देवि! मद्य, मांस, मछली, मुद्रा और मैथुन—ये पांच मकार हैं जिन केसेवन करने से देवता प्रसन्न होते हैं।

मद्यं मांसं तथा मत्स्यं मुद्रा मैथुन मेव च।
शाक्तेपूजाविधावाद्येपञ्चतत्त्वं प्रकीर्त्तितम् ॥

पं० गौरी शंकर का मान्य महानिर्माण तन्त्र
उल्लास ५ श्लोक २२ ॥

शराब, मांस, मछली, मुद्रा तथा मैथुन शक्तिपूजा की विधि के आदि में सेवन योग्य ये ५ तत्त्व कहे हैं।

कितना स्पष्ट वर्णन है, परन्तु फिर भी दुराग्रही लोग कहने लग जाते हैं कि वस्तुतः इन शब्दों के आध्यात्मिक गूढ़ अर्थ और हैं जो अदीक्षित पुरुषों को ज्ञात नहीं हो सकते ऐसे लोगों के बोध के लिये हम कुछ उदाहरण स्वयं तन्त्रों से देकर यह सिद्ध करेंगे कि खुद तन्त्र इस-

मद्य, मांस, मीन, मुद्रा और मैथुन—पांच मकारों के क्या अर्थ बतलाते हैं।

१ मकार—मद्य

गौड़ी पैष्टी तथा माध्वीत्रिविधाचोत्तमासुरा
सर्वे नाना विधा प्रोक्ता ताल खर्जूर सम्भवा
तथा देश विभेदेन नाना द्रव्य विभेदतः ।
बहुधेयं समाख्याता प्रशस्ता देवतार्चने ॥

पं. गौरी शंकर का मान्य महानिर्वाण तन्त्र
उल्लास ६ श्लोक २

श्री महादेव जी ने कहा गौड़ी, पैष्टी और माध्वी यह तीन प्रकार की उत्तम सुरा हैं। यह सुरा ताल से उत्पन्न होती है, खजूर से उत्पन्न होती है व और वस्तुओं से उत्पन्न होने के कारण अनेक प्रकार की होती है। इस कारण देश भेद और द्रव्य नाम भेद से यह सुरा अनेक प्रकार की कही गई है। यह सब सुरा देव पूजा में श्रेष्ठ हैं।

(टीका—सुरादाबाद निवासी सुखानन्द मिश्रात्मज पं० बलदेव प्रसाद मिश्र)

यावन्न चालयेद् दृष्टिं यावन्न चालयेन्मनः
तावत्पानं प्रकुर्वीत पशुपानमतः परम् ॥

(पं० गौरीशंकरका मान्य महानिर्वाण तन्त्र उल्लास ६-१९५)

जब तक दृष्टि न घूमे, जब तक मन चंलायमान न हो तब तक पिये; इससे अधिक पान करना पशुपान-के तुल्य है।

यावन्नैन्द्रिय वैकल्यं यावन्नो मुख विक्रया
तावद् यः पिवते मद्यं स मुक्तो नात्र संशयः
पीत्वा पीत्वा पुनः पीत्वा यावत्पतति भूतले
उत्थाय च पुनः पीत्वा पुनर्जन्म न विद्यते
आनन्दात्तप्यतेदेवी मूर्च्छया भैरवः स्वयम्
वमनात्सर्व देवाश्च तस्मात्त्रिविधमाचरेत

कुलार्णव तन्त्र उल्लास ७ श्लोक ९९, १००, १०१

जब तक इन्द्रियों में विकलता न आये, जब तक मुख पर विकार प्रतीत न हो, तब तक जो मद्य पीता है वह निस्सन्देह मुक्त हो जाता है ॥ ९९ ॥

मद्य पीकर, फिर पीकर, एक बार और पीकर—यहां तक कि पृथिवी पर गिर पड़े—फिर उठकर जो पीता है उसे पुनर्जन्म नहीं होता ॥ १०० ॥

आनन्द से—श्लोक ९९ में वर्णित विधि से—देवी की तृप्ति होती है, और बेहोशी से—श्लोक १०० में कही विधि से—स्वयम् भैरव प्रसन्न होते हैं और कै कर देने से तमाम देवता खुश होते हैं; अतः तीनों प्रकार से मद्य का सेवन करे। (क्यों जी इनका आध्यात्मिक गूढ़ अर्थ क्या है ?)

सुरा दर्शन मात्रेण सर्व पापैः प्रमुच्यते
तद् गन्धाघ्राणमात्रेणाशतक्रतु, फलं लभेत्
मद्य स्पर्शन मात्रेण तीर्थ कोटि फलं लभेत
देवि तत्पानतःसाक्षाल्लभेन्मुक्तिं चतुर्विधाम[1]
सुरा गंगा सुरा सिन्धुः सुरा देवी सरस्वती
सुरा गोदावरी रेवा सुरैव परमम्पदम्

मेरु तन्त्र प्रकाश १—३८, ३९, ४४

---

(१) चार प्रकार की मुक्ति यह है—
१ सायुज्य, २ सामीप्य, ३ सादृश्य, ४ सारूप्य।

मद्य के दर्शन मात्र से सब पापों से विमुक्त हो जाता है, और उसकी गन्ध को सूँघ लेने से एक सौ यज्ञों का फल मिलता है। ३८।

सुरा के स्पर्श कर लेने से क्रोड़ तीर्थ का फल प्राप्त होता है। हे देवि! उसके पान कर लेने से साक्षात् चार प्रकार की मुक्ति लाभ होती है॥ ३९॥

शराब ही गङ्गा है, शराब ही सिन्धु है, शराब ही देवी सरस्वती है, शराब ही गोदावरी है और शराब ही रेवा है, शराब ही परमपद है।

कहिये तीर्थ, तप, दान, धर्म्म, नियम, व्रत, पूजा, पाठ, यज्ञ, होम, गया, श्राद्ध, पूजन, अर्चन, यहां तक कि परम पद भी एक बोतल में आ गये कि नहीं। बोलो पंडित गौरीशंकर के मान्य ग्रन्थों की जय।

शक्त्युच्छिष्टंपिवेन्मद्यं वीरोच्छिष्टंतुचर्वणां

मेरु तन्त्र प्रकाश १० श्लोक ३६९

शक्ति (वाम मार्गी लोग जिसे नंगा करके भैरवी

१—राज वेश्या नागरीच गुह्य वेश्या तथैव च।
देव वेश्या ब्रह्म वेश्या च शक्तयः पञ्च प्रकीर्तिताः
रुद्रयामले

चक्र में पूजते हैं) का जूठा मद्य और वीर (वाम मार्गी पुरुष) का जूठा "खाबा" (शराब पीने के अनन्तर जो कुछ खायाजाता है) खाना चाहिये ।

सुरान्निन्दन्ति ये मूढ़ास्ते मूढ़ाजन्म जन्मनि

मेरु तन्त्र प्रकाश १० श्लोक ४५

जो मूरख आदमी सुरा की निन्दा करें वह जन्म जन्मान्तरों में मूढ़ होते हैं ।

क्या तन्त्रों को मान्य बतलाने और मानने वाले पंडित गौरीशंकर आदि फिर भी कथाओं में "सुरा देवी" की निन्दा करेंगे ?

२ मकार—मांस

मांसं तु त्रिविधं प्रोक्तं खभू जलचरं प्रिये ।
यथा सम्भवमप्येकं तर्पणार्थं प्रकल्पयेत् ॥
मांस दर्शन-मात्रेण सुरा दर्शन वत् फलम् ॥

कुलार्णव तन्त्र उल्लास ५—४४ ।

मांस तीन प्रकार का कहा है—१. गगन बिहारी पक्षियों का, —२. स्थलचर जीवों का और —३. जलचर जन्तुओं का । इन में से यथा सम्भव कोई एक

तर्पण के वास्ते लिया जा सकता है। मांस के दर्शन मात्र से भी सुरा दर्शन वत् फल प्राप्त होता है अर्थात् सब पापों से छुटकारा हो जाता है इत्यादि (देखो इसी पुस्तक का पृष्ठ ३१, ३२)

अब्राह्मणा नराणान्तु मांसं सर्वोत्तमं मतम्
मृगाणाञ्च तथा प्रोक्तं तित्तिरादिक पक्षि-
णाम् ॥

मेरु तन्त्र प्रकाश २० श्लोक १४३

ब्राह्मण से अतिरिक्त अन्य आदमियों का मांस सर्वोत्तम कहा गया है। फिर मृगों और तित्तिरादि पक्षियों का भी।

ब्राह्मण का मांस भी हराम। क्यों जी इसलिये कि घर को लगती है?

पशु बलिदान

स्ववाम भागे सामान्यं मण्डलंसचयेत्सुधीः
सम्पूज्य स्थापयेत्तत्रसामिषान्नंसुधान्वितम्
सर्वोपचारैः सम्पूज्य बलिं दद्यात्समाहितः

मृगच्छागश्च मेषश्च लुलायः सूकरस्तथा ।
शल्लकी शशकोगोधाकूर्म्मःखड्गो दशस्मृताः
अन्यानपि पशून्दद्यात्साधकेच्छानुसारतः
सुलक्षणां पशुं देव्याअग्रेसंस्थाप्य मन्त्रवित्
अर्घ्योदकेन सम्प्रोक्ष्य धेनुमुद्रामृतीकृतम्
ततः खड्गं समादाय कूर्च्चबीजेन पूजयेत् ॥
इत्थं निवेद्य च पशुं भूमिसंस्थं तु कारयेत् ।
देवीभाव परो भूत्वा हन्यात्तीव्रप्रहारतः ॥
ततः कवोष्णं रुधिरं बटुकेभ्यो बलिंहरेत् ।
एवंबलिविधिःप्रोक्तःकौलिकानां कुलार्चने
अन्यथा देवता प्रीतिर्जायते नकदाचन ॥

पं० गौरीशंकर का मान्य महानिर्वाण तन्त्र उल्लास ६॥ श्लोक ५४, १०४, १०५, १०६, १०७, १११, ११५ ११६, ११७, ११८ !

ज्ञानी पुरुष अपने वाम भाग में एक साधारण चौकोन मण्डल खेंच कर उस में मद्य मांसादि साहित अन्न

स्थापन करे ॥ ४५ ॥

इस प्रकार वाद्यादिक सर्वोपचारों[1] से देवी की पूजा समाप्त कर सावधान हो, बलिदान करे ॥ १०४ ॥

मृग, छाग, वरहा, नाम एक पशु, मेष भैंसा, शूकर शलकी (सेई) शशक, गोह, कछुआ, यह दश प्रकार के ही पशु, बलिदान के लिये श्रेष्ठ हैं ॥ १०५ ॥

इनके सिवाय साधक की इच्छानुसार और पशुओं का भी बली दिया जा सकता है ॥ १०६ ॥

मन्त्र जानने वाले साधक, सुलक्षण पशु को देवी के आगे रखकर अर्घ्य का जल छिड़क कर धेनु मुद्रा[2] करे।

१—उपचार यह हैं—ध्यानम्, आह्वानम्, आसनम्, पाद्यम्, अर्घ्यम्, आचमनीयं, तैलं, दुग्ध, दधि, घृत, मधु, शर्करा गुड़—स्नानम्, मधुपर्क, शुद्धोदकस्नानम्, वस्त्रम्, उपवीतम्, भूषणम्, चन्दनम्, अक्षता, पुष्पाणि, धूपः, दीपः, नैवेद्यानि, फलानि, सिन्दूरम्, ताम्बूलम्, द्रव्यं, दक्षिणा, माला, दूर्वाः प्रदक्षिणाः इत्यादि ॥

२—मुद्रा यह होती हैं—त्रिशूल मुद्रा, योनि मुद्रा, संहार मुद्रा, धेनु मुद्रा, तत्त्व मुद्रा इत्यादि ।

फिर तलवार लाकर कूर्च बीज[1] (हूं) से पूजन करे॥ १११

इस प्रकार निवेदन करके पशु को भूमि पर लिटादे । ११५ । देवी की भक्ति में परायण हो तीक्ष्ण प्रहार से पशु का वध करे ॥ ११६ ॥ तब गर्म गर्म (कोसा) रक्त की भैरव को बलि दे ॥ ११७ । यह वामियों के लिये कुल पूजा के समय बलि की विधि कही है क्योंकि और किसी प्रकार से देवता की प्रसन्नता नहीं होती ॥ ११८ ॥

३ सकार—मत्स्य

उत्तमास्त्रिविधा मत्स्याःशालपाठीनरोहितः
मध्यमाः कण्टकैर्हीना अधमा बहुकण्टकाः ।
तेऽपिदेव्यै प्रदातव्या यदि सुष्ठु विसर्जिताः

पं० गौरी शंकर का मान्य महानिर्वाण तन्त्र,
उल्लास ६ ॥ श्लोक ७-८ ॥

१—बीज इन शब्दों को कहते हैं, काली बीज—क्रीं, लज्जा बीज—ह्रीं वाग्बीज—ऐं, तारा बीज—क्रीं, लक्ष्मी बीज—श्रीं कामबीज—क्लीं कूर्चबीज—हूं, प्रणवबीज—ॐ मायाबीज—ह्री, अस्त्रबीज फट इत्यादि ।

तीन प्रकार की मछलियां उत्तम कही हैं, शाल, पाठीन, और रोहित। कांटों के बगैर जो मछलियां हैं वे मध्यम प्रकार की और बहुत कांटों वाली निकृष्ट प्रकार की।

वे भी देवी को देनी चाहियें अगर अच्छी तरह से भुनी हुई हो।

४ मकार—मुद्रा

मुद्रापि त्रिविधा प्रोक्ता उत्तमादि विभेदतः
चन्द्रबिम्बनिभं शुभ्रं शालितण्डुलसम्भवम्
यवगोधूमजं वापि घृतपक्वं मनोरमम् ॥ ९॥
मुद्गेयमुत्तमा मध्या भृष्टधान्यादिसम्भवा।
भर्जिताऽन्यबीजानि अधमा परिकीर्त्तिता

पं. गौरी शंकर का मान्य महानिर्वाण तन्त्र।
उल्लास ६ ॥ श्लोक १० ॥

अच्छे चावलों, जौ, और गेहूं की साफ और शुद्ध बनी हुई और घी में तली हुई मुद्रा उत्तम होती है ॥९॥

भृष्ट (भुने हुए) धान्यों से तय्यार की हुई मध्यम

और अन्य भुने हुए बीज आदि अधम मुद्रा कहलाते हैं ॥ १० ॥

५ मकार—मैथुन

अकस्माच्च न सेवेत बलेन कुलयोगिनीम्
चक्र मध्ये स्वयं लुब्धां वा स्वतः प्रार्थनीं....

मेरु तन्त्र प्रकाश १० श्लोक ५६८

कुलयोगिनी को अचानक बल से नहीं बल्कि भैरवी चक्र में स्वेच्छा पूर्वक रति की प्रार्थना करती हुई स्त्रि को सेवन करे।

इति भावनया वामी रतिं कुर्वन्विमुच्यते

मेरु तन्त्र प्रकाश २० ॥ श्लोक १५४।

इस भावना से (कि मैं शिव हूं और यह स्त्री पार्वती है) स्त्री के साथ मैथुन करता हुआ वामी छूट जाता है ॥ १५४ ॥

आत्मजाया तथा नाय्यों यक्षिणी प्रमुखा:

पर: । वामिना ताश्चभोक्तव्या एष धर्म्म सनातन: १६ ॥

अपनी स्त्री या यक्षिणी आदि दूसरी स्त्रियें वामियों को भोगनी चाहियें, यह सनातनधर्म है ।

क्यों जी सुन लिया महाराज ।

चाण्डालीनामपि स्त्रीणां स्पर्शे दोष न मानयेत् ॥ १६२ ॥

भैरवी चक्र में चाण्डाली स्त्रियों के साथ भी स्पर्श (मैथुन क्रिया) में देष न माने ।

मेरु तन्त्र प्रकाश ॥ २० ॥

चक्रमध्यगता: सर्वे पुरुषा: शिव रूपिणा:
स्त्रिया सर्वाश्च पार्वत्यस्तस्माद्भेदं न कारयेत्

श्लोक ॥ ४६१ ॥

भैरवी चक्र में गए हुए तमाम पुरुष शिव रूप हैं और सब स्त्रियां पार्वती रूपिणी, इस लिये भेद नहीं समझना चाहिये ।

मद्यकुम्भ सहस्रैस्तु मांस भार शतैरपि
न तुष्यति महायाया भगलिंगामृतं बिना

श्लोक ४६२

शराब के हज़ारों घड़े हों, और मांस के सैकड़ों भार; परन्तु महामाया भग और लिंग के अमृत के बगैर प्रसन्न नहीं होती।

मेरु तन्त्र प्रकाश १० ॥

धन्य हो ! धन्य हो !! धन्य हो !!!

भगिनींवासुतांभार्य्यांयोदद्यात् कुलयोगिने
मधु मत्ताय देवेशि तस्य पुण्यं न गण्यते।

कुलार्णव तन्त्र उल्लास ६ श्लोक ११६

हे देवेशि ! मद्योन्मत्त कुल योगी (वाममार्गी) को जो पुरुष अपनी बहन, पुत्री या स्त्री देता है उसके पुण्य की गणना नहीं हो सकती।

शोक ! महा शोक !! मेरी जाति के उच्च मस्तिष्क को क्या होगया कि ऐसी भ्रष्ट शिक्षा देने वाली पुस्तकों को भी मान्य ग्रन्थ मानने लग गई। प्रभु दया करो !

तारा मन्त्र जाप का तरीका ।

रजस्वला भगं दृष्ट्वा पठेदेकाग्र मानसः
लभते परमं स्थानं देवी लोके वरानने ॥

हे पार्वती ! रजस्वला स्त्री की भग को देखकर एकाग्र चित्त से इस मन्त्र का जो पाठ करे वह देवी लोक में परम स्थान को प्राप्त होता है

फिर—

वेश्यालतागृहे गत्वा तस्याश्चुम्बन तत्परः
तस्यायोनौमुखन्दत्त्वा तद्रसंविलहन्जपेत्

वेश्या के लतागृह में जाकर उसके मुख को चूमते हुए उसकी योनी में लगाकर उस के रस को चाटता हुआ जप करे ।

कोई है जो उक्त उदाहरणों के गूढ़ आध्यात्मिक अर्थ बतलाने की कृपा करे ! शोक तो यह है कि लोगों को अन्ध परम्परा में फंसा रखा है । उन्हें यह बतलाया ही नहीं जाता है कि तन्त्रों में क्या है और पुराणों में क्या ।

लोग बिचारे अनभिज्ञता के कारण जो भी किसी से सुन पाते हैं तथास्तु कह देते हैं। परमात्मा करे लोग अपने लिये स्वयं लिखना पढ़ना और विचारना सीखें ताकि अज्ञान वश जिस अन्ध कूप में स्वयं गिरे हुए और जाति तथा देश के अधः पतन का कारण बने हुए हैं उससे निकल कर संसार भर की प्राचीनतम जाति के पुनरुत्थान के साधन बनें।

अगले ट्रैक्ट में पुराणों की कथायें इस उद्देश्य से लिखेंगे ताकि विवेक प्रिय सज्जन देख सकें कि उनमें किस प्रकार असङ्गत, असम्भव तथा अश्लील अण्ड बण्ड भरा पड़ा है।

॥ ओ३म् शम् ॥

॥ ओ३म् ॥

सुगन्धित धूप तथा हवन सामग्री

हमने यह महा सुगन्धित अष्टगन्ध धूप परिश्रम पूर्वक अनेक सुगन्धित वस्तुओं से तय्यार किया है। इसके जलाने से स्थान सुगन्धित और वायु की शुद्धि होती है। एक डिब्बा पौने दो छटांक मू० =) दो आने।

ऋतु अनुसार हवन सामग्री भी हर समय तैयार मिलती है, जिसके इस्तेमाल से सब प्रकार के रोग-कीटाणु नाश हो जाते हैं।

हमारा लाल चूर्ण पेट की हर एक बीमारी के लिये लाभ दायक है।

शुद्ध शिलाजीत, ब्राह्मी बूटी, पवित्र अर्क, शर्बत, मुरब्बे, माजून इत्यादि हर समय वाजिबी कीमत पर मिल सकते हैं।

मिलने का पताः—

मेलाराम अत्तार,

कटड़ा चढ़तसिंह अमृतसर

विरजानन्द दण्डी
... धर्म पुस्तकालय